-: [illegible] :-

१) [illegible]
२) [illegible]
३) [illegible]
४) [illegible]
५) [illegible]
६) [illegible]
७) [illegible]
८) [illegible]
९) [illegible]
१०) [illegible]
११) [illegible]
१२) [illegible] -
१३) [illegible]
१४) [illegible]
१५) [illegible]
    १) [illegible]
    २) [illegible]
    ३) [illegible]
१६) [illegible]
१७) [illegible]
१८) [illegible]
१९) [illegible]

३] सिंदूरकी होली [पंचमसंस्करण]

नारीपात्र क्रमांक १

**म नो र मा** ३

1. तत्वज्ञानी
2. मानसिक द्वंद
3. नारी मनकी परख
4. निराशवाद
5. समझौता
6. समझदारी
7. त्यागीभावना
8. आस्तिकवृत्ती
9. आशावादी
10. मानवतावादी
11. सामाजिक मर्यादाका विचार
12. भावनाशील विशुद्ध प्रेम
13. स्वाभिमानी
14. धार्मिकता
15. भावनाओंका उदात्तीकरण
   1. चित्रकार 2. संगीतप्रेमी
   3. निसर्गप्रेमी
16. स्वप्नवृत्ती
17. तार्किकता
18. अटूट आत्मविश्वास
19. स्पष्टवक्ता

**1] तत्वज्ञानी**

मनोरमा मुरारीलालके घर रहना नहीं चाहती अब वह कहीं और घर करना चाहती है । मुरारीलाल जानकर है कि मनोरमा का कोई घर नहीं है । तब मनोरमाका तत्वज्ञान स्पष्ट होता है की भौतिक सुख यही सुख नही है । क्यों की मनका सुख मानवको चाहिये संसारका सुख तो वस्तुओंसेसिमीत है । फीरभी मानव को अपने मनके शांतीके लिये कुछ सुखकी जगह चाहिये । क्यों की आखिर जीवनमें शरीर सुखसे महत्वपूर्ण सुख मनका सुख है । जो जीवनके लिये आवश्यक है ।

संसारकी सीधी भाषामें जिस चीजको लोग सुख समझते है। वह तो मुझे यहाँ दो महिनोंसे मिल रहा । समयपर स्वादिष्ट भोजन और सुख की नींद सुंदर वस्त्, संसार का सुख तो इन्ही वस्तुओंमें सिमीत है। यह सब होते हुये भी तो येह आपका घर है। मुझे अपना घर बनाना है।

मनोरमा मुरारीलालसे मनसे तो प्रेम नहीं करती। क्योंकी वह अपने विधवा पनको अच्छी तरह जानती है। उसके पतीको कभी देखाती नही तो भी वह पतीके सूरतको कैसे याद ला सकती है? इसका उत्तर मुरारीलालको मिल नहीं पाता। वह जीवनके कुछ तत्वोंपरही जीवित रहती है।

मनोज शंकरके वार्तालापमें मनोरमा उससे शुद्ध प्रेमकी अपेक्षा करती है। उसने चंद्रकलाका उदाहरणभी इसलिये दिया कि वह अब किसीके प्रेममें फसनी जब गयी की बिमार पड गयी है। पर मनोरमाका कहना है किी तुम दोनोंका प्रेम महान ताकी और जाना चाहिये। भिक्षुक जातीकी तरही ही पुरुष जाती होती है। ऐसा उसका निष्कर्ष है। क्योंकिी जहा आकर्षण है वहाँ पुरुष जाते है। शांती तथा तृप्ती करते हैं। इसलिये शरीर प्रेम छोडकर वासना रहित उदात्तभावनासे एवं महानतासे भरा प्रेम हम करेंगे जो अशारिरीक होगा। ऐसा मनोरमाका विचार है।

" हम लोगोंको अपनेसे महान
होना है मनोज। "

मनोरमाका कहना है की पुरुषोंको दुखका अनुभव कम होता है। क्योंकी वैधव्यका दुख स्त्रीयाँ ही झेलती है। स्त्रीही उस दु:खका विचार तक कर सकेगी। मनोरमाको अपना पती मर जानेसे कोईभी सुख नहीं मिला। और अब उसकी धारणा हुई है कि जो मिल नहीं पाया उसका दुख क्या और सुख क्या? दोनो समानही है।

मुझे उस तरहके किसी अभावका अनुभव हुआ ही नहीं । जो मिला नहीं । उसका चला जाना उसका सुख क्या है ? और दु:खक्या है ?

मनोजकिर तथा मनोरमा वार्तालाप करते है । संसार शुन्यमय है त था उसके कोई और बात नहीं है । शुन्य के आधारपरही संसार भरा है । चल रहा है । मनोरमाने उसको बदल दिया है । तथा संसारका महाव तत्व वह जान गयी है कि संसारमे शुन्यता भरी है और कुछ नहीं ।

"यहमहान चित्र जिसे हम संसार कहते हैं ? शुन्यके आधारपर बना है । लेकिन मैं तो अब चित्र नहीं बनाऊंगी ।

मनोरमाने यह भी समझा है कि पुरुषके कारणही स्त्रीयोंको प्रायश्चित्त करना पड़ता है । पुरुष केवल सुखके हिस्सेदार होते है ।
[illegible] ।
रजनीकांतकेमृत्यूसे चंद्रकला तथा उसके पत्नीकोभी दुख मिला है, मनोरमाके पतीकी मृत्युके कारण ही मनोरमा विधवा बनी । आदी बातोंसे उसका मन भर आता है । और उसका पुरा पक्का विश्वास बनता है की पुरुषही स्त्रीको दुखी करनेके लिये जिम्मेदार हैं ।

"यही पुरुषके लिये प्रायश्चित्त करना पड़ता है स्त्री को । स्त्री जीवनका सबसे सुंदर कठोर सत्य यही है । स्त्री इसीलिए दुखी है और पुरुष इसी को स्त्री का अधिकार समझता है ।"

मनोरमाको समझ गया है कि हर कीसीको दुख है । हर किसीको इस दुखके निपटारा करना पड़ता है । सुख और दुखमें न डगमगाते हुये भी दुखोंका सामना पड़ता है । मुरारीलालसे वह स्पष्ट कहती है की दुखसे भरी रात कभी ना कभी खत्म जरूर होगी ।

"यह दुखकी रात है ही । सब किसीको दुख है । आज क्रोध न किजीए । आजकी रात बीताना ही नहीं चाहती । ध्यान कहा रहा ? "

२) मानसिक द्वंद्व :
==========

मनोरमाकी मानसिक अवस्था विचित्र है । क्योंकी वह बाल विधवा है। उसका विवाह नहीं होना चाहिये था ऐसा उसका कहना है । पर ये बात दैव योगकी है । क्योंकी आठवर्षकी अवस्था में ही वह विधवा बन बैठी जब उसकी शादी हुई थी । तब उसे इसका ज्ञानभी नहीं था । पति का सुख क्या होता है ? विवाह का अर्थ क्या है ? विधवापनकी वेदनायें क्या है ? कोई अर्थ वह जानती नहीं । वह इस विचित्र अवस्थामें है कि जिस चीज को उसने देखा नहीं उस व्यक्तीका सुख तथा दुःखका कोई फर्क नहीं । मनोरमाके सुख तथा दुखके मध्यकी मानसिक भावनामें सहना पड रहा है क्या वह कुमारी है ? क्या वह विधवा है ? आखिर वह है कौन ? उसका स्थान क्या है ? मनोरमा समझ नहीं पाती ।

लेकिन मेरेलिये तो संदेह है आठ वर्षकी थी तभी शादी हुई । दो वर्ष बादही वह मर गये । तब से इधर आठ वर्ष बीत गये। जिस वस्तुका अनुभव हुआ ही नहीं उसके अभावका दुख क्या ?

मनोजशंकरसे मनोरमाने अपना मन व्यक्त किया है । तथा एक दूसरेने विशुद्ध प्रेमकी सौगंधभी खायी है । एक दूसरेको अपनेसे महान बनानेका प्रयत्न करनेका इरादा किया है । इतना होनेपरभी नारी अपने मनपर कितना नियंत्रण रख सकती है ? क्यों कि आखिर वह स्त्री है । स्त्रीके शरीर तथा मनकी भूखको मिटनी चाहिये । मनोजशंकरसे मनोरमाको प्रश्न है कि वह क्या करे ? वह किसकी बनी मनोजशंकरकी ? या डिप्टी साहबकी ? एकतरफ वह डिप्टीसाहबसे पेटभर घृणाभी करती है तो दूसरी ओर वह मनोजसे प्रेमभी करती है जो प्रेम विशुद्धभावनाका है जिसे मनोजशंकर सही अर्थमें समझ सके ।

एक तरफ उसे दुख है कि मनोजशंकरको वह दुल्हा बना नहीं सकी और दूसरी तरफ डिप्टीसाहबको अधूरेमें छोडा ।

आखिर उसे मान्य है की वह विधवा है स्त्री है अबला है। वह अधीक समयतक टीक नहीं सकती। वह अपने मनमें उठी नैसर्गिक भावनाओंकी ज्वालाकोभी छिपा नहीसकती। वेबारक वह माला लेकर वृशिकेशभी जाना चाहती है।

"तब भी मै किसकी बनु ? तुम्हारी या डिप्टी साहबकी। जहाँतक मेरी बात रही मैं तो तुम्हे जी भर घृणा करती हूँ। और तुम्हे जीभर प्रेम। अगर तुम मेरे प्रेमका अर्थ समझ सको। मुझे इसका अवसर दो। मैं तुम्हे अपना दुल्हा तो नहीं बना सकती, लेकीन - प्रेमी बना लुंगी।

मनोरमाकहती है की यह इसे विविध अवस्थामें है की चंद्रकला मनोजशंकर तथा रजनीकांतके मध्ये मानसीक व्दंव्दावस्थामें अटक गया है वह इन सभी व्यक्तीयोंके बारेमें सचिंत है की वह क्या करे ? क्या बात करे ? चंद्रकलाके दवाकी योजना हो गयी पर अबतो सभी लोग मरीज हो गये है। डिप्टीसाहबकेलियेभी मनोरमा एक कठिन समस्या है जो छुट नहीं सकती। चंद्रकला रजनीकांत, रजनीकांत-चंद्रकला, डिप्टीसाहब मनोरमा, मनोरमा मनोजशंकर इन सभी लोगोंका अेक दूसरेके बारेमें व्दंव्दावस्था ही है।

डिप्टीसाहबके लिये मै भी समस्या हूँ, और तुम्हारे लिये भी मैं क्या करु ? किसके किसके लिये रोदु ? अपने लिये?, तुम्हारे लिये, साहबके लिये अथवा चंद्रकलाके लिये ? चंद्रकलाकी दवाकेलिये डॉक्टर आये है। इस मरीजोंकी दवा कौन करेगा ? चंद्रकलाका रोग असाध्य है, लेकिन हम तीनो का तो संत्रासक हो क गया है।

## ३] नारी मनकी परख

मनोज शंकरकहता है की अब विधवाये नही रहेंगी ? व कोई विधवा अविवाहित रहेगी पर मनोरमाका स्पष्टमत है कि समाज

यह समाज नहीं करेगा । तलाक, विधवापन, आदि बातें होनेही वाली । नारीको मिला हुआ यह शाप है । जो मिट नहीं सकता । न कोई उसे मिटा सकता । चंद्रकला का वैधव्य किसीनेभी देखा नहीं तो मनोरमाको समाज फिरसे सुहागन बना नहीं सका । समाजमें - लोगोंने, बड़े साधु कवि नाटककार उपन्यासकार, राजनितिज्ञ, पैदा होते रहे पर कोई भी इस बातको बदल नहीं सका ।

मनोरमाने स्त्री मनकी भावनाओंको समीपसे देखा है, अनुभव लिया है । इसी कारण वह अखिल स्त्री जातीकी पहचान बनी । वैसेमें दुर्भाग्यकी बात यह है कि भारतीय स्त्रीके लिये फिरसे सुहागन बननेकी व्यवस्था नहीं है । क्यों कि स्त्री को सिर्फ उपभोगके लिये ही उपयोगमें लाया गया है ।

विधवा विवाह हो रहा है । लेकिन वैधव्य कहाँ मिट रहा है । समाज इस आगको बुझा नहीं सकता ? इसलिये उसे आपने - उसको उठाकर अपनी नीवमें रख रहा है । तुम्हारे सुधारक राजनितिज्ञ कवि सभी विधवाओंके आसुओंमें बहते हुए देख पड़ रहे हैं । अपनी विशेषता मिटाकर संसारके साथ चलना चाहते हैं ।

4) निराशावाद

मनोरमा बाल विधवा है जीवनमें दुख झेलनेके कारण वह काफी दुखी भी है और माहिर अलीके सामने वह कह भी देती है कि मैं अब जगतकी चिंता क्या करूँ ? क्योंकी मेरेलिये रोनेवालाभी तो कोई रहा नहीं ताकि किसीको मेरे मरनेसे बुरा लगनेवाला है । वह जीवनसे उकता गई है । और जीवनमें जीने जैसे कुछभी नहीं बचने के कारण अब सभी बातोंसे अनमिक दृष्टीसे तंग आ गयी है । यह उसके मनकी उद्विग्नावस्था है ।

"मेरे लिये कौन रोने वाला है माहिर ?

माहिरका विचार है कि क्या [redacted] मनोरमाको मौतका डर नहीं है ? तब भी मनोरमाका निश्चय दृढ है । निराशाके इसे बादल भर आये है । [redacted] तब वह कहती है कि

"नहीं किसलिए डरूँ मैं भला मुझे जिंदगी लेकर क्या करना है ? "

मनोरमाकी यह निराशा उसे मरण प्रवृत्तीकी ओरही ले जाती है । वह अपने आपको खत्म करना चाहती है । उसकी यह निराशा दृष्टी उसे जीवन संग्रामसे दूर लेजानेका प्रयास करती है ।

5) समझौता :

मनोरमा मनोजशंकरको जीवनसे समझौता करनेकेलिये कहती है, संसारमें एक नया आदर्श पैदा करना चाहती है । शारिरिक वासनासे अलग जाकर वह अपनी भावनाओंका, विचार प्रकट करती है । उसने मनोजशंकरसे कहा है कि, वह विधुर बनकर रहे तथा स्वयं मनोरमा विधवा बनकर रहेगी । मनोजशंकरको बाँसुरी बजाकर जीवनके आनंदमें समा जानेके लिये वह भी चित्रकलाव्दारा अपनी भावनाओंका उदात्ती करण करेगी । इस प्रकारसे सम्मिलन ही जीवनका आधार बन सकता है । परिस्थितीसे समायोजन करनाही सच्चे आनंद तथा सुखकी पहचान हो सकती है । इसलिये मनोज शंकरका उसने हाथ बढानेके लिये कहा है ।

"तुमने मेरा हृदय, मेरी अंतरात्मा को समझ लिये है, तो हाथ बढाओ, या लडो । पकड लो । तुम बाँसुरी बजाओगे । मै चित्र बनाऊँगी । मैं विधवा हूँ । और [redacted] तुमको भी विधुर होना होगा । और इस प्रकार हमारा सम्मिलन आज एक जीवनका नहीं अनेक जीवनका हो गया है ।"

मनोरमाने जीवनका सुख तथा दुख दोनोंका एकत्रीकरणही मान्य किया है । इन दोनोंमे यदि बेबनाव बन जाता है तो विधवा विवाह,

तलाक आदि बातोंको पीछे ही डालना पडेगा । इन दोनोंसेही समझौता करना पडेगा । समाजको अमरजिंदा रहना है तो कोई एक बुराई मान्य करनाही पडेगी ।

सुही समाजका आदर्श है । इसीओं समाजकी भलाईहै । फिर स्त्री पुरुषके जीवनमें न संदेह होगा, न शक न झगडा व दुख\दुखको खत्म करनेका रहा तो समझानेकी दवाही लागू हो सकती है ।

" स्त्री और पुरुषका सम्मिलित जीवन सुख, दुख दोनोंका न तो कोई शंका न संदेह न तलाक\किसीभी परिस्थीती में समझौता और सामंजस्य । इस प्रकार समाजकी स्थिती दृढ है । संभव है इसमें भी बुराई हो । लेकिन जुबीयम मिलते भला कहाँ है ।

8) समझदारी

चंद्रकलाकी देवभावना अधीक जागृत होती है । और वह कहती है कि, रजनीकांतकी पत्नीको दूसरा चित्र बनवा दो । ताकि उसका पहला बनाया हुआ चित्र चंद्रकलाको फिरसे मिल जाये । चंद्रकला जलनके मारे कहती है कि वह पत्नी उस चित्रका क्या उपयोग करेगी ।

मनोरमा स्त्री का दुखी मन जानती है । स्त्रीकी भावनायें समझ सकती है । पतिप्रेम क्या चीज है यह उनसे मालुम है । पतीकी पूजाका समाधान क्या है । यह वह जानती है । पतीके चित्रको हृदयपर रखकर वह पूजा करेगी, चिंतन करेगी । स्त्री आखिर और क्या करेगी ? जिस स्त्री का पती नहीं होता वह स्त्री स्वप्नोंमेंही पतीप्रेमका सुख लेती है । मनोरमाकी यह समझदारी की भावना उसके त्यागी तथा सहनशील - वृत्तीका प्रतीक है ।

"दिन को इसकी पूजा करेगी । और रातको अपने हृदयपर रखकर सो रहेगी "--------------- ?

मनोरमा चाहती है कि रजनी कांतकी पत्नीका आहत हृदय

तथा दुख किसी न किसी प्रकार कम होना चाहिये । क्योंकी उसके सिवाय वह जख्म भर नहीं पायेगा । मनोरमाकी यह सहानुभूती तथा रजनीकांतकी पत्नीके प्रतिक समझदारीकी पहिली दिख पडती है । वह चंद्रकला जैसी जल्दी प्रवृत्तीकी नहीं बल्की पुरानी स्त्रीके दर्दको वह समझाती है ।

"इसीलिये तो कहा की चित्र भेज दो ......वह फिर किसी हद तक भर उठेगा । सहानुभूती शब्दोंमें नही व्यक्त हो सकती । बहन कुछ करना चाहिये ।

चंद्रकलाको काफी दुख है कि मनोजशंकरभी वह नहीं थी तथा रजनीकांतकी भी वह हो ना सकी । इतनेमें मुरारीलाल आता है और चंद्रकलाको उसे नाम क्यों ही गई इसका कारण पूछते हैं । और चाहती तो मनोरमा असली बता सकती थी ।पर वह समझदार है औरोंकी कमियाँ वह प्रकाशमें लाना नहीं चाहती इसलिये वह चंद्रकलाकेभी झूठमूठ बोलती है की मनोरमा अब यहाँ नहीं रहनेवाली, इसलिये चंद्रकला बुरा मान गई है । अर्थात रजनीकांतसे छिपा हुआ चंद्रकलाका प्रेम वह जाहिर नही करना चाहती ।

"मै अब यहासे जाना चाहती हुँ । इसीसे तुम्हे --------

मनोजशंकरसे मनोरमाने कहा है की यद्यपी चंद्रकला उसे ठीक तरह नहीं समझपाती तथा रजनीकांतके प्रेममें फसी रही । पर क्या यह गलती थी की रजनीकांतके सुंदर शरीर का परिणाम चंद्रकलाको मोहमें नहीं डाले । अगर चंद्रकला अपने आपको संभाले नही पायी तो दोष किसका है ? इसलिये बडेही समझदारीसे मनोजशंकरको वह सब बाते भूल जानेकेलिये तथा नये जीवनके आशाके साथ जीवनका समझौता करनेका कहती है । मनोरमाने अपने प्रौढावस्थाकी दृष्टीसेही यह सब देखा है ।तथा बुराईको भी डालनेके लिये कहा है ।

पहले यह स्वीकार कर लो की तुमभी मोहके हो और वह भी । न तुम उससे अच्छे हो और न वह तुमसे बुरी है ।वह अपना मोहछिपा नहीं

स्कोर ऐसा अनुमान करना कि रजनीकांतका अपने पुत्रके रूपमें प्रेमके करने लगी है । ठीक नहीं पर वह संभाल नहीं सकी । शिवने जैसा विष पचा लिया उसी तरह तुम भी इस दुराशको पचा लो । इससे तुम्हारा पुरुषत्व चमक उठेगा ।

7) <u>त्यागी भावना</u> :

मनोरमाने विज्ञापन लेकर जीवनमें त्यागका अर्थ समझा है । उसने चित्रको जरूर बनवाया पर चित्रका सच्चा मालिक जो है उसेही वह चित्र मिलना चाहिये । ऐसा उसका विश्वास है । चंद्रकलाका मन चित्र लौटानेके लिये नहीं मानता पर मनोरमाका मन वह चित्र उसकी (रजनीकांत) पत्नीकी ओर भेजदेना चाहिये । चंद्रकांतको यह बात मंजूर नहीं है । पर मनोरमाका स्वभाव विभिन्न हो वह चाहती है कि चंद्रकलाने वह चिट्ठी रजनीकांतको अपनी तरफसे दान कर देना चाहिये । क्यों की जिसकी चीज उसे लौटा देना चाहिये ।

मनोरमा त्यागी भावनाको अधिक महत्व देती है । वह औरोंके सुखके लिये त्यागभी सहन करती है ।

"दान कर दो अपनी तरफसे मुझे इसकी जरूरत है । "

8) <u>आस्तिकवृत्ती</u>

मनोरमा कहती है । मुझे परमेश्वरके आसराके सिवाय कोई नहीं है । मानवके सारे सहारे जब टूट जाते है तब वह परमेश्वरकी और दौड जाता है । परमेश्वरका सहारा लेता है । उसीको अपना आधार बनाता है । वह सारा जग करुणामय ईश्वर मय मानती है । उसका कहना है एक दुनियामें परमेश्वर ही दुख तथा सुख देता है । उसकी सब कृती मानत है । सारी बाते परमेश्वर के होनेसेही होती है । वही सब कुछ बनाता या मिटाता है । जैसे एक चित्र बना था और नष्ट भी हो गया ।

"संसार तो ईश्वरमय है । फिर माया है कहाँ ?"

९] आशावादी

मनोरमाका कथन है कि जीवनमें विषादके स्वरसे कुछ काम नहीं चलता । आनंदके स्वर बजानेसेही काम अच्छा बन पड़ता है । सभी तरफ आनंद है । आनंद देनेसे वह बढ़ता है । द्विगुणीत होता है । जिसे बाँटना चाहिये । जीवनमें अगर आनंदसे जीवन जीना है तो जीवनका आनंदरसही लूटना आवश्यक है । मौतको कोई भी मांगेगा । लेकिन जीना कठीन है । इसलिये आशाभरी दृष्टी कौन अच्छा रखता है ।

> *विषादका स्वर न बजा कर आनंदका स्वर बजाया करो ।

क्या आनंद नहीं है ? चित्तवृत्तीका निरोध योग है और यही आनंद है । जो चाहते हो वह न चाहो —— आनंद तुम्हारा है और तुम हो आनंद को ————

१०] मानवतावादी

मनोव्यक्तिसे विचार व्यक्त करनेवाली मनोरमा कहती है कि आत्मज्ञान का रस अंधोसे लंगड़ोसे पूछो, जिन्होने जीवनके दुःख झेले है । आत्मज्ञानका रस जीवनका आनंद वहाँ मिलेगा । जहाँ घृणा नहीं है, सिर्फ प्रेममय वातावरण रहेगा । वह चाहती है कि दूसरे जीवनमें महत्वपूर्ण कुछ नहीं मिलता बल्की प्रेमसेही आनंद मिलता है । मानव सब तरहसे समान है । यह भावना वह व्यक्त करती है ।

> *अंधोसे पूछो, लंगड़ो और लूलो से पूछो, जिनका
> शरीर गल रहा है आत्माका रस तुम्हे उनका
> पास मिलेगा । घृणा न रहे —— बस प्रेम
> तुम्हारा है ————

## (ii) सामाजिक मर्यादाका विचार

मनोजशंकरको मनोरमासे कहा है की रजनीकांतके सौंदर्यपर कुंकना मोहित हो गयी है । वह यह भी जानती है की मुरारीलाल कुंकना का विवाह मनोजशंकरसे करना चाहते है । पर मनोरमा - जानती है कि समाजमें तो ऐसी कोई व्यवस्था नहीं है कि जो - जिससे संबंध रखना चाहे उससे विवाह करे । इसने परभी कुंकनाका विवाह हो चुका है ऐसा समझकर उसने अपना सर्वनाश किया है । अब इस समय परभी मनोरमा सोचती है कि अगर सामाजिक समताका ख्याल रखना है तो कुंकना ने अविवाहित रहनाही योग्य है । क्यों की अब फिरसे विवाह करना यह एक प्रकारका व्यभिचारही होगा ।

मनोरमा अपनी मर्यादाओंके कारण अब कुंकनाकी मर्यादासे क्या हो सकती है । यह बात समझ गयी है । शायदही उसके अपने अनुभवोंके आधार ही वह इसके प्रमाणमें सामाजिक मर्यादाका ख्याल रख रही है । मनोरमाके जीवनमें मानसिक प्रौढता आ गयी है । मनकी प्रौढता तथा विचारोंकी प्रौढता । जो [illegible] कुंकनामें नहीं आयी :

"तुम्हें अपनी जंजीरे तोड देनी होगी । समाजमें तो ऐसी कोई व्यवस्था नहीं है जिससे उसका संबंध उससे हो सके । इसके अतिरिक्त उसका विवाहभी हो सके । इसके यह सब जानकर समझकर उसने अपना सर्वनाश किया है । उसके कल्याण और उसके रमणीत्वकी मर्यादाका तो केवल एक रास्ता रह गया है और वह है उसका अविवाहित रहना। उसका विवाह तो अब व्यभिचार होगा ------"

मनोरमाने तो इसके आगेजाकर एक और विचार किया वह यह की शारिरीक व्यभिचारसे कहीं भयंकर है मानसिक व्यभिचार

SHIVAJI UNIVERSITY LIBRARY KOLHAPUR

जिससे मानव अपने आपको बचा नहीं सकता , संभाल नहीं सकता ।

" आवेश क्यों ? शारिरीक व्यभिचारसे कही
भयंकर है मानसिक व्यभिचार "

**(2) भावनारहित विशुद्धप्रेम**

मनोरमा समझ गयी है कि मनोजकर उसके प्रेममे पड रहा है । पर मनोरमाने भी अब हृषीकेश जानेका इरादा किया है । सब कुछ आकर्षणोंका वह त्याग करनेवाली है । कोई शारिरीक तृप्तीकी भावना नही होगी मनोरमा मनोजकरको चाहना - जरूर है पर वह शुद्ध तथा सात्विकप्रेम उससे करती है । क्योंकी सच्चा तथा शारिरिक प्रेमको उसने अपने मरे पतीको ही उसका अर्पण किया है । वह मनोहरको शरीरके मोहमें नही पडनेका उपदेश देती है । तथा शुद्ध प्रेममें रहनेका वादा करवाती है । वह मनोजकरसे काफी आत्मीयता रखती है । पर शरीर संबंधता अब वह नही रखेगी । यह बात कुभावना पर सुभावनाकी विजय ही है ।

"लेकिन मै यह चाहती नहीं । मैंने तुम्हारे साथ
किसी तरहका खिलवाड नहीं किया । मैं तुम्हे चाहती
हूं । तुम्हारे साथ एक प्रकारकी आत्मीयता का अनुभव
मैं करती हूँ । तुम जिस मोहमें पड़ गये हो ------ वह
तो भयंकर है । -----------

**(3) स्वाभिमानी**

मनोरमा मुरारीलालका बोझ्साती अपने सर लेना नहीं चाहती । वह उसकी लोलुप वृत्तीसेभी बाज आ गई है । क्योंकी मुरारीलाल सच्चा प्रेम नहीं करते हुये शरीर लेप करता है । वह जानगई है पुरुषोंको सिर्फ शरीर का आकर्षण होता है । सुंदर

स्त्री अगर मृत्युशैयापरभी मिले तो वे उसे चूमेंगे । इसने कमाने होते है ।

मनोरमा कहती है कि वह मुरारीलालके यहाँ चित्र - सिखाने आई थी । मजदूरी तथा मेहनतकी कमाई उसने पाई है । अगर मुरारीलाल कुछ दे भी देता है तो कोई दया की बात नहीं है क्यों कि मनोरमाने मेहनत की है वह स्वाभिमानीसेही रहेगी । न कि किसीकी दयापर ।

"आपकी लड़कीने मुझे बुलाया था , चित्रकला सिखानेके लिये । इसमें आपकि कोई अनुकंपा नही है । और अगर आपकी इच्छा हो तो मैं स्वीकार कर लूँगी कि मैं - आपके साथ सम्मान के साथ रही, इसके लिये मैं आपकी कृतज्ञ हूँ । क्षमा कीजियेगा पुरुष बड़े लोलुप होते है । विशेषत: स्त्रियोंके संबंधमें मृत्यु - शय्यापर भी सुंदर स्त्री उनके लिये सबसे बड़ा लोभ हो जाती है "——

मनोरमा नैतिक लड़की है । मुरारीसे पक्की है । इसलिये वह बड़े स्वाभिमानसे मुरारीलालको अपने ही अभिमानकी इज्जत करनेकेलिये बाध्य करती है । वस्तुत स्वयंअभिमानी वृत्तीका व्यक्ती सत्य हो ।

14] आस्तिकता

मनोरमा का जी अब उचट गया है । वह लखनऊ छोड़कर ऋषीकेश जाना चाहती है । मानव जब सब बातोंसे ऊब जाता है , तब वह परमेश्वरके प्रति लगाव रखता है। अपने मनका वह स्व-भावनाके प्रति आकर्षित करता है । मनोरमा अब रंग और कलम छोड़कर ब्रह्मकी ओर अपनेको मोड़ देती है ।

" मैं हृषीकेश जाऊँगी — रंग और कलम गंगामें फेंक कर माला लूँगी ।

यह मनोरमाकी भावनाओंका योग्य ऐसा अुदात्तीकरण ही है ।

[5] भावनाओंका अुदात्तीकरण

1. चित्रकार

मनोरमा अपने जिवनमें दु:खी है। अपने जीवनका चैन व आराम तथा सौभाग्य अुसे मिला नहीं क्योंकि वह बाल विधवा है । इसीलिये दु:खी है । अुसने अपनी पूरी कला अुंडेलकर चित्र बनाया है । जो चित्र चंद्रकलाका मन मोह लेता है वह अपनी भावनाओंका प्रदर्शन चित्रको पूर्ण करके अुसमें अपने स्वर्गीय पतीका रूप देखती है ।

" तो वह भी बन गया ।"

चंद्रकला जीवनमें दु:खी है। इसीलिये मनोरमाने उसके दिल बहलानेके लिये ऐक अधूरा चित्र बनवा डाला । मनोरमाका वह चित्र बनानेके पीछे कोई प्रयोजन नहीं था पर निष्प्रयोजनही अुसने वह चित्र बनाया। वह कलाकार है । अपनी कलाकी परीक्षामें लिये ही अमूल्य सेवा अुसने की । अपनी अुदात्त भावनाओंको मोड दिया । वह कलाका जीवनमें महत्व तथा स्थान समझती है ।

"ऐसे ही मुझे कुछ दिन अवकाश समय लिया और इसीलिये निष्प्रयोजन यह चित्र बनाने लगी । केवल अपनी कला की परीक्षाके लिये । कलाके अमूल्य के लिये संसारमें जवाहीर तो अब भी क्या कहूँ ?

2] संगीतप्रेमी

मनोरमा बहुमुखी प्रतिभासम्पन्न कलाकार है । अुसे संगीतसे भी प्रेम है ।

मनोजशंकर से वह संगीत सिखानेकी विनंती करती है । मनोरमा अंदरकी चौहसे मनोजशंकरको प्रेम भी करती है । उसने स्पष्ट किया है कि आजकल वह ठीक तरहसे सो नहीं पाती । क्योंकि उसका मन अब कहीं लगताही नहीं । उसकी इन भावनाओंका उदात्ती-करण वह संगीतप्रेममें स्वेदता लगाकर करती है क्यों की उसका - समय सुखसे बीतेगा ऐसी उसकी धारणा है ।

"मुझे भी सिखा दो । रातको मै बहुत
कम सो पाती हूँ । मुझे नींद नहीं आती ।
इसलिए सुखसे बीतेगा ।

3] निसर्गप्रेमी

मनोरमा सिर्फ चित्रकार ,संगीतप्रेमीही नहीं तो परिस्थि-तियोंपर मात करनेके बाद वह निसर्गप्रेमी जीवनमें होनेवाली मदद या कुछ भावना कितनी महत्वपूर्ण है यह वह जानती है। मनोजशंकर कहता है कि मनोरमाके जीवनमें अब कोई रस नहीं क्या न कोई रस अब रहा । पर मनोरमाको यह मान्य नहीं है । उसके हृदयमें शरदकी चाँदनी वसंतका पवन ग्रीष्मका अनुताप वासना, विकार सभी बातोंका विचार भी है ।

जीवनमें आये हुए अनुभवोंको उसने निसर्गसे जोड़ा है । निसर्गमें देखाहै । मनकी हरभावना उसने निसर्गके हर वातावरण में देखी है ।

"इसीलिये कि वह भूमिका होती है उसके भीतर
शरद की चाँदनी होती है ,वसंत का पवन होता
है । ग्रीष्मका अनुताप होता है । हृदयका रस दो
सुंदर शब्द जिनका अर्थ होता है, वासना विकार
अपने पापकी प्रदर्शनी ---- आत्मा का आत्मा का
रस लोगो ।

जीवनमें स्मोलाओंकी बूंद है । पर फिरभी चाँदकी तरह चांदनी की तरह, फूलकी तरह, श्वेत दाढ़ी मूछ की छायामें रंग उनका साथ लिया है । जीवनमें सभी जगह निसर्गकी भावना दिखाई पड़ती है ।

> "मेरा जीवन पिताजी की बुद्धि की तरह,
> चांदनीकी तरह, फूलकी तरह श्वेतदाढ़ी और
> मूछकी छायामें रंग और उनके साथ होता है ।---

16] स्वप्नपूर्ती

मनोरमाने अपने पतीको तो देखातक नहीं पर वह उसका पती कैसा होगा ? इसका पूरा पूरा विचार कर सकती है । क्यों की उसने अपनीही कल्पना शक्तीसे अपने दोस्तके भी पतीका रूप आंखोंके सामने ला रखा है । सभी अपनी मुग्धावस्था में पतीका रूप बनाती है । पर जिसका सच्चा अस्तित्व नहीं है । उसकी कल्पना है उसपर वह वास्तविकरूप दिखलाती है । जो बात नहीं है उसका लोप करती है । तथा अस्तित्वकी कुरूपताको अतिपूर्ण करलेती है । मनोरमाने अपने पतीकी छबी कल्पनाके आधारसे बना ली है । उसकी भावना अपने मनके विचारोंसे नहीं होती, गुलाब खिल रहा था, पवन बह रहा था, आश्विनरातको पूर्ण मासीका चंद्रमा अंबरों की ओर देख रहा था । उसे देखकर मेरी कल्पना और भावना उत्तेजित हो उठी । मैंने उसका चित्र बना दिया ।

> "इन आंखोंने तो कभी नहीं देखा लेकिन कल्पनाकी
> आंखोंसे नित्य देखती हूँ । शरीर, गोराभाला मुख,
> कमलकी आंखें, कमानकी भौंहें, लंबे काले, काले, घुंघराले
> बाल, यह स्वरूप इस समय मेरे सामने आ गया है ।

**(7) तार्किकता**

मनोरमा भावुक ज़रूर है । समझदार होकर वह निश्चयी भी है । पर समझदार वह अपने मनका विश्लेषण भी नहीं खोती है । चंद्रकला अविचारी जैसा वर्तन करती है । तब रजनीकांत के वियोगसे वह सब हो रहा है यह मनोरमा भी जानती है । पर इतना होनेपरभी मनोरमा चंद्रकला को विचारपूर्वक वर्तन करनेको लिये कहती है । अविचारी वर्तन से दूर जाने के लिये कहती है । हृदयकी भावना बाजूमें रखकर वह बुद्धीसे काम लेती है । मनोरमा तर्कवृत्तीसे काम लेना जानती है ।

> "मुझे संदेह है, तुम विचार नहीं करतही हो " ——
> "बहन सावधान होनेकी जरूरत है " ——

**(8) अटल आत्मविश्वास**

मनोरमाको खुदके बारेमें अटूट आत्मविश्वास भी है । व मुरारीलालकी शरीर सुखकी भावनाके प्रति उसका तीव्र द्वेष है । मुरारीलालकी शरीर सुखकी कामनाका पता उसे [illegible] चला है । वह दृढ विश्वाससे कहती है कि अबतक अगर वह कभी मनका नियंत्रण खो बैठती तो शायद [illegible] उसका चरित्रभी खोया हुआ पाती । शायद वह नरकमें चली गई होती । पर उसने अपने चरित्रको अपने अटूट आत्मविश्वाससे बचाया है । वह अपने पतिके प्रति अतीव विश्वास रखती है ।

> " भाभी आपको मैंने झोंसी नहीं । शाम आगेका अगर अगर मेरे मनपर काबू न रहता तो अबतक तो मैं कभी की खो बैठी होती —— अपना चरित्र और अबतक ? नरक की सजा मिलती तब मैं पहुंच गई होती ।

माहिरकी मनोरमासे कहता है कि रजनीकांत कहीं न कहीं जरूर आ टपकेगा । वह मरा है जरूर पर फिरभी डर लगता है । मनोरमाका आत्मविश्वास है की कुछ ना होगा यदि वह आ जाता है । तो उसे वह पकड़कर रखेगी ।

मनोरमाको अब कुछ भी डर नहीं लगता ऐसा दृढ़ - विश्वास है क्यों कि वह जीवन मरण प्रसंगोंसे अब आगे बढ़ गयी है । उसका आत्मविश्वास इतना अटूट है कि मुझे कुछ नहीं होने वाला ।

"मुझे कुछ नहीं होगा । तुम न डरो ।

[9] स्पष्टवक्ता

मनोरमा मुरारीलालके मोहमें पड़नेवाली नारी नहीं है । वह अपनी निष्ठापर अटल है । मुरारीलाल अपना लोभी प्रेम - मनोरमा से जाहिर करनेकी चेष्टा करता है । पर मनोरमाको यह पसंद नहीं है । वह उसे डाँटती है फटकारती है कि उसके किसी भी बातमें मनोरमाने दखल नहीं देना चाहिये । उसका मुरारीलाल के प्रति रोष है कि समाजके दंडकी व्यवस्था मुरारीलाल जैसे ढोंगी समाज सुधारक करते है । पर उन्होंने उसके गलतीयोंके लिये कोई व्यवस्था नहीं की है । वह पुकारती है कि मुरारीलाल अपनी मर्यादा भूलकर शरीरसुखके जुआनमें जबरदस्ती औरतोंको फंसानेकी कोशीश करता है । वह स्पष्ट करती है कि वह विधवा है । उसे कोई गैर काम न करे । वह मुरारीलालसे उसे बचाने के लिये रुकावट डालती है ।

"कदापि नहीं । आपही सोचिये । दूसरोंके दंडकी व्यवस्थातो आप करते है । आपके दंडकी व्यवस्था कौन करेगा ? और यह उचित भी नहीं है । कई दिनोंसे आपका संकेत कर रहेहै । आप अपनी मर्यादा भूल रहे है । मैं विधवा हूँ । मेरे साथ परिहासका कोई अर्थ नहीं ।

मनोरमा विधवा विवाहके प्रति स्पष्ट नकारात्मक भूमिका लेती है । वास्तविक रूपसे अगर देखा जाय तो पुरुषोंने अपने स्वार्थ तथा सुधारके लिये विधवा विवाह निर्माण किया है । ऐसा उसका स्पष्ट कथन है । विधवाएँ समाजके लिये कलंक है यह विचार भी निकालना है । उसका दावा है कि स्त्रीके भीतर संयम साधना , त्याग एवं गौरवका बीज है । विधवाके आदर्शोंसे समाज का आदर्श जीवित रहता है । मनोजशंकरको हरबात स्पष्ट करती वह — विधवाकी भूमिका साफ सुनी करती है । मैं विधवा हूँ । इसलिये विधवा विवाहके पक्षमें वोट दूँ ? यही न । लेकिन मैं यह न करूँगी । विधवा विवाहकेनामपर यह आंदोलन पुरुषोंने उठाया है । अपने उद्धारके लिये । तुम जीवनका विशेषता स्त्री के जीवनका दूसरा पहलू भी समझते हो ? देखते हो ? उसके भीतर संयम है । साधना है । त्याग और तपस्या है । यही विधवा को आदर्श है ।

मनोरमा विधवा है का मजाक कदापि सहन नहीं कर पाती । जब मनोरमाके समझमें आया है कि मनोजशंकर उसके प्रेममें फँस रहा है जो बात मनोरमा नहीं चाहती । उसने मनोजशंकरसे स्पष्ट कहा है को इतना निर्बल पुरुष कोई कामका नहीं । उसने भी साफ आज्ञा दी है कि मनोरमाके प्रतिका मोह मनसे निकाल दो क्योंकि मनोरमाका मनोजके प्रति कोई लगाव नहीं है न ही मनोजशंकरसे कोई लगाव तथा प्रेम रखने आवश्यकता रही है ।

" मेरे सामने तुम्हारा यह आत्मसमर्पण तुम्हारे लिये कितने अपमानकी बात है । तुम पुरुष हो । मैंने विचार किया मुझे मालूम होगया कि तुम मेरे मोहमें कर तरहका संकल्प कर रहे हो । तुम्हारे मनमें मेरे प्रति विकार क्या रहेगा । मुझे न पूछो तुम्हे क्या करना है । अपने पुरुषत्वसे पूछो ।

मनोरमाका यह जवाब मुँह तोड़ जवाब लगता है ।

मुरारीलाल मनोरमाकी स्तुति करता है तथा उसे मानवतावादी कहता है । मनोरमा गुणमयी है । वह स्तुति सहन नहीं कर सकती । उसे फालतू भावुकता पसंद नहीं है ।

मुरारीलालसे स्पष्ट वह कहती है कि उसे स्तुति अप्रिय है । स्त्रियोंको कोई आवश्यकता नहीं है । झूठी प्रशंसाकी मात्रा वह सहन नहीं कर सकती । इसी कारण मुरारीलालका कोई भी मोहित करने वाला शब्द मोहित नहीं कर पाता।

मनोरमा तत्काल मुँह तोड़ फटकारती है ।

" मैं अपनी प्रशंसा नहीं चाहती । मेरा जीवन तो केवल सेवा और त्यागका है । हमारी सेवा अब होनेकी होगी हो जायेगी ।

मनोरमाका यह स्पष्टवक्ता दर्शन उसके व्यक्तित्वकी ओर एक इशारा है ।

SARR. [illegible] LIBRARY
SHIVAJI UNIV[illegible]